प्रवचन नं. ३० गाथा-८ ता. १०-७-७८ सोमवार अषाढ सुद-५ सं.२५०४

समयसार गाथा ८ - अब यहाँ पुनः यह प्रश्न उठता है, सातवीं गाथा सुनी तब प्रश्न उठा क्या ? यदि - ऐसा है तो एक परमार्थ का ही उपदेश देना चाहिए, क्योंकि तुम तो व्यवहार को तो हेय कहते हो और उस व्यवहार को आदरणीय नहीं कहते हो, तब एक परमार्थ का ही उपदेश देना चाहिए, व्यवहार के उपदेश की क्या जरूरत ? - ऐसा शिष्य का प्रश्न है। समझ में आया ? जब तुम - ऐसा कहते हों कि व्यवहार दर्शन-ज्ञान-चारित्र यह भी व्यवहार, यह भी हेय है, यह व्यवहार पर्याय मात्र हेय है, और अकेली त्रिकाली ज्ञायक भाव परमार्थ वस्तु वह ही उपादेय है, तब परमार्थ का (ही) उपदेश देना (चाहिए) व्यवहार का उपदेश क्यों देते हो ? शिष्य का यह प्रश्न है। समझ में आया ? (अकेले परमार्थ का) उपदेश देना चाहिए, व्यवहार किसलिये कहा जाता है ? इसके उत्तर स्वरूप गाथा सूत्र कहते हैं।

ऐसी जिसको जिज्ञासा हुई कि परमार्थ वस्तु वही वस्तु है, ज्ञायक चैतन्य अभेद

वही आदरणीय है और जो दर्शन, ज्ञान, चारित्र का भेद, यह भी व्यवहार आदरणीय नहीं, हेय है, तब व्यवहार का उपदेश क्यों कहते हो ? परमार्थ का कहो न - ऐसा शिष्य का अंतर में जिज्ञासा से प्रश्न है, उसका उत्तर देते है।

संस्कृत है ऊपर, देखते है न, `**तर्हि परमार्थ एकैव वक्तव्य इति चेत्**' इसकी उनने व्याख्या की संस्कृत में।

जह ण वि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा दु गाहेदुं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवदेसणमसक्कं।।८।।

भाषा अनार्य बिना न, समझाना ज्यु शक्य अनार्यको।
व्यवहार बिन परमार्थ का, उपदेश होय अशक्य यों।।८।।

गाथार्थ :- जैसे अनार्य... कुन्दकुन्दाचार्य के समय में अनार्यभाषा चलती थी, अब हल्का काल आया थोड़ा हजार वर्ष बाद तब अमृतचन्द्राचार्य के समय में, म्लेच्छभाषा प्रयोग होती, भाषा इतनी बदल गई। समझ में आया ? कुन्दकुन्दाचार्य तो कहें जह ण वि सक्कमणजो... अनार्यभाषा बिना, ऐसी भाषा है, तब अमृतचन्द्राचार्य के समय में भाषा भी थोड़ी अनार्य शब्दों के स्थान पर म्लेच्छ भाषा का प्रचलन हुआ। यह कहा जा चुका था पहले... शुरूआत में यह भाषा पुनः हुयी ? अनार्यभाषा के बिना तो अमृतचन्द्राचार्य को भी अनार्यभाषा बिना कहना था, समझ में आया ? तब अमृतचन्द्राचार्य तो म्लेच्छ भाषा प्रयोग करते थे, यह म्लेच्छभाषा अमृतचन्द्राचार्य के समय की है। आहाहा ! काल बदला तो भाषा बदल गई अनार्य की जगह म्लेच्छ आगई। आहा ! म्लेच्छजन को, अनार्य भाषा के बिना अर्थात म्लेच्छ भाषा बिना, वर्तमान काल की अपेक्षा से उसे (म्लेच्छ) अमृतचन्द्राचार्य कहते हैं, किसी भी वस्तु का स्वरूप ग्रहण करने के लिये कोई समर्थ नहीं। किसी भी चीज को भेद किये बिना अनार्य भाषा के प्रयोग बिना उसे समझा सकते नहीं। अनार्य आदमी को उसकी अनार्य भाषा से समझा सकते है। दूसरी भाषा से समझा सकते नहीं। किसी भी वस्तु का ग्रहण नहीं हो सकता उसी प्रकार यह दृष्टांत, व्यवहार के बिना... भगवान आत्मा को भेद से व्यवहार के बिना उपदेश उसको क्या कहें ? व्यवहार से उसको उपदेश देना पड़ता है। आत्मा आत्मा अकेला करें परंतु आत्मा क्या है - ***ऐसा भेद करके बताना यह व्यवहार (के) बिना परमार्थ का उपदेश हो सकता नहीं, व्यवहार से परमार्थ प्राप्त हो सके - यह बात यहाँ नहीं,*** समझ में आया ?

व्यवहार से परमार्थ प्राप्त कर सकते हैं - ऐसा नहीं परंतु व्यवहार के उपदेश बिना निश्चय का उपदेश समझ में आता नहीं, फिर भी आगे कहेंगे। व्यवहार के

बिना... यहाँ से (लोग) विरोध करते हैं, इस गाथा से, देखो व्यवहार बिना परमार्थ प्रगट होता ही नहीं... व्यवहार पहले हो यह बात यहाँ है ही नहीं, यहाँ तो भगवान आत्मा... अनार्य भाषा बिना अनार्य को समझाना असंभव है। समझ में आया ? आहाहा !

जब पालिताना के राजा नहीं थे, तब क्या कहलाता यह गोरे अंग्रेज आये काम करने, क्या कहलाता भाई... राजा का स्वर्गवास हुआ तो राज्य की व्यवस्था के लिये गोरा आया, तब (श्रोता :- एडमिस्ट्रेटर) हाँ, यही। फिर एक दफा गारियाधार आया गारियाधार है न ? हम तो गारियाधार में थे, हमारी बहिन वहाँ थी, तब वह घोड़ा ऊपर खड़े थे, बीच में चौक है, पर आया, वास्तव में तो व्यक्ति म्लेच्छ जैसा, यहाँ की भाषा (न आती)- ऐसा बोलता था बा...ज...रा... है है ? बाजरा इसप्रकार। बाजरा बाजरा - ऐसा कहीं नहीं, अच्छी तरह सुना यह संवत ५९ की घटना है। यह ५९ बा...ज...रा... है ? अब वह अपनी भाषा के अनुसार, भाई तुम बाजरा को भिन्न-भिन्न कहते हैं - ऐसा नहीं बाजरा अखण्ड शब्द (है) गोरा (अंग्रेज) गोरा (सफेद) था, राजा गुजर गया अतः काम करने आया। आहाहा !

यहाँ कहते हैं, जैसे यह अनार्य अर्थात कि म्लेच्छ भाषा, म्लेच्छ देश के, म्लेच्छ के व्यक्तियों को उसकी म्लेच्छ भाषा बिना उसको समझा सकते नहीं, इसीप्रकार आत्मा का अंजान पुरुष को आत्मा का भेद व्यवहार किये बिना यह समझा सकते नहीं। व्यवहार से समझ सकते हैं। व्यवहार से होता है यह प्रश्न यहाँ नहीं। समझाने को व्यवहार आता है, परंतु व्यवहारसे समझाते क्या ? कि तुम अखण्ड अभेद हो और भेद करके तुमको अभेद बताते है, समझ में आया ? आहाहाहा !

हैं ? व्यवहार के बिना परमार्थ का उपदेश असंभव है। यह लोग जहाँ हों वहाँ एक बारहवीं गाथा का अर्थ और एक यह (गाथा) यह दो गाथाओं से विरोध करते वहाँ लोगों से कहते देखो ! व्यवहार से, यहाँ आया था उस दिन, लीमड़ीवाला, चिमन चक्कु। चिमन चक्कु यहाँ आया था न ९७ की साल में... देखो ! यह व्यवहार से आता है। व्यवहार बिना परमार्थ... ९७ साल में मंदिर बना था न (संवत्) ९७ में तब यहाँ एक महीना रहा था। बारहवीं गाथा का झगड़ा तो अभी तक चलता है। अभी अखबार (जैनपत्रिका) में आया था बारहवीं गाथा में देखो ! व्यवहार से ही निश्चय की प्राप्ति होती है। व्यवहार से ही यह होता है। - ऐसा लेख शास्त्र में है। `व्यवहार देसिदा' - ऐसा पाठ है न ? व्यवहार दर्शाया होने पर भी, होने पर भी व्यवहार से परमार्थ समझ सकते है।

व्यवहार दिखाने की परिभाषा ही दूसरी है, यह तो आत्मा अंदर ज्ञायक स्वरूप है (अभेद) (उसको) भेद करके बताया और वह अभेद समझ गये... तब उसको गुण

भेद करके बताना पड़े कि देखो ! (यह) जानता है न, जानता है न, ज्ञानस्वरूप परिणमित होता है न, यह आत्मा, विश्वास करने लायक जो है, वह आत्मा और जो स्थिरता होती है अंदर में, यह आत्मा। - ऐसा गुण भेद करके बताये बिना यह (अज्ञानी) समझ सकते नहीं, परंतु समझना तो इस अभेद को है, भेद से समझाते हैं तो भेद को समझना - ऐसा नहीं, समझ में आया ? आहाहा ! अर्थ में फर्क, भाव में फर्क, और ऐसी सभी गड़बड़। (श्रोता :- भेद से अभेद समझ में आता है कि भेद का लक्ष्य छोड़े तब अभेद समझ में आये) भेद से और यह तो अभी कहेंगे, भेद से समझना परंतु भेद का अनुसरण नहीं करना। समझनेवाले को और समझानेवाले को दोनों को ही... समझानेवाले भी व्यवहार में तो आते हैं, विकल्प में आये तब भेद को समझाते है न ? और श्रोता को भी भेद से समझाते हैं, परंतु दोनों को व्यवहार का अनुसरण नहीं करना।

भेद से तो समझना, दूसरा कोई उपाय नहीं है। इस कारण भेद को समझाते हैं परंतु समझनेवाले को और यहाँ समझानेवाला छद्मस्थ लेना है यहाँ केवली लेना नहीं। समझ में आया ? यहाँ उस समय केवली तो थे नहीं, मुनि थे और मुनि तो छद्मस्थ हैं तब अपना स्वयं का दृष्टांत देते हैं, कि भाई केवली - ऐसा कहते हैं कि यह आत्मा (तुम हो) फिर यह आत्मा न समझ में आये तो केवली ने भेद करके समझाया यह बात यहाँ है नहीं... यहाँ तो वर्तमान उस समय भगवान के विरह में संत और आचार्य थे, वह जगत को व्यवहार से समझाते थे, यह बात लेंगें। यह स्वयं भी व्यवहार में आते है, क्योंकि निर्विकल्प अनुभव में है तब तो उपदेश होता नहीं... आहाहा ! और दूसरों को समझाना है तब विकल्प तो आये बिना रहे नहीं, तब विकल्प आया वही व्यवहार है, तब वह समझनेवाला भी व्यवहार में तो आाय। है और समझनेवाले को व्यवहार से समझाते हैं। आहाहाहा ! समझ में आया ?

परंतु दोनों को ही व्यवहार अनुसरण करने लायक नहीं। पण्डितजी ! आहाहा ! न अनुसर्त्तव्यः... आहाहा ! ऐसी वस्तु परम सत्य यह तो बापू ऐसी चीज है यह अभी तो... (चलती नहीं) आहाहा !

टीका :- `जैसे किसी म्लेच्छ'** पाठ में अनार्य है न ? टीका में म्लेच्छ आ गया, हजार वर्ष हो गये न ? कुन्दकुन्दाचार्य की गाथा के बाद टीका... म्लेच्छ (भाषा) के बिना, किसी म्लेच्छ यदि कोई ब्राह्मण... देखा ? ब्राह्मण कहा है `स्वस्ति' - ऐसा शब्द कहा, `स्वस्ति' म्लेच्छ से ब्राह्मण ने **`स्वस्ति' - ऐसा कहा, **तब यह म्लेच्छ उस शब्द के वाच्य वाचक संबंध को न जानने से कुछ भी न समझकर** उस ब्राह्मण की ओर भी भाषा (न) समझनेवाला, समझनेवाला यहाँ कैसा लिया है कि उसको

`स्वस्ति' कहाँ तब सुननेवाले को ऊब गया, यह क्या कहते हैं, हम कुछ समझते नहीं न - ऐसा क्या कहते हैं - ऐसा नहीं (लिया)।

यहाँ - ऐसा जीव लिया है। आहाहा ! कि भाषा समझने कों वह टकटकी लगाकर देखते हैं कि यह क्या कहते हैं ? यह `स्वस्ति' ऊब नहीं, शंका नहीं, मात्र समझ में आता नहीं, यह यहाँ क्या कहते हैं **`स्वस्ति'** `स्वस्ति' क्या ? `स्वस्ति' - ऐसा है न? शब्द कहा, यह म्लेच्छ उस शब्द के वाच्य-वाचक, वाच्य-वाचक का अर्थ `स्वस्ति' शब्द वाचक है और उसका अर्थ स्वस्ति तुम्हारा कल्याण हो। स्व आत्मा की अस्ति है - ऐसा कल्याण हो यह उसका वाच्य है। जैसे शक्कर शब्द है यह वाचक है और शक्कर पदार्थ वाच्य है, शक्कर शब्द है उसमें शक्कर पदार्थ नहीं, शक्कर पदार्थ है उसमें शक्कर शब्द नहीं परंतु शब्द वाचक है यह शक्कर वाच्य को बताता है, भाषा तो सरल है भैया। अभी तो दृष्टांत है यह। आहाहा !

`वाच्य वाचक संबंध' यह उसका अर्थ किया वाच्य क्या है ? कि स्वस्ति का जो भाव है यह वाच्य है और स्वस्ति शब्द है वह वाचक है। तो वाचक (शब्द) बताते हैं इस स्वस्ति (शब्द) का अर्थ तब स्वस्ति का अर्थ वह समझते नहीं, और स्वस्ति शब्द सुना तो यह अर्थ न जानने से कुछ भी समझ नहीं सकते, क्या कहते हैं ? स्वस्ति क्या है यह ?

`उस ब्राह्मण की ओर मेंढ़े की भाँति,'** भेड़-भेड़ होती है न, भेड़, भेड़ नीचे देखकर चलते दूसरी उनके पीछे अनुकरण करके चलती जाती है... भेड़ नीचे नीचे देखकर, **`इसीप्रकार भेड़ की तरह सुनते ही उसके ऊपर बराबर लक्ष्य लगाकर' क्या कहते हैं यह ? ऊब नहीं है, अनादर नहीं है, नहीं समझते हैं तो समझना नहीं - ऐसा भी नहीं है। समझ में आया ? आहाहा ! **`भेड़ की तरह, आंखें फाड़कर'** आंखे बंद करके ऐसे के ऐसे - ऐसा नहीं, क्या कहते हैं यह ? सुनना तो है कान से परंतु आंखें फाड़कर अर्थात उनका लक्ष्य वहाँ है भाई, ये यह क्या कहते हैं ? यह स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति **`आंखें फाड़कर टकटकी लगाकर'** आंखे फाड़कर और फिर टकटकी लगाकर आंखें तो ये फाड़ी उतना नहीं परंतु ऐसे टकटकी लगाकर (कि) क्या कहते हैं यह आहाहाहा ! यह तो संस्कृत टीका आचार्यों की है, एक-एक शब्द में बहुत गंभीरता है, यह कहीं कहानी किस्सा नहीं, आहाहा ! दिगम्बर संतो की धर्म कथा... आहाहाहा !

`आंखें फाड़कर टकटकी लगाकर' आंखें तो फाड़ी परंतु उसके ऊपर एकाग्रदृष्टि, उसके ऊपर लक्ष्य करके, आंखें तो फाड़ी पर उसके ऊपर लक्ष्य करके देखता ही रहते है' स्वस्ति कहता है उसको न समझने न समझने के कारण ब्राह्मण देखता

ही रहता है। यह क्या कहते हैं ? `स्वस्ति' आहाहा ! **`किन्तु जब ब्राह्मण की और म्लेच्छ की भाषा का दोनों का अर्थ जाननेवाला'** दोनों का अर्थ जाननेवाला क्या कहते हैं ? ब्राह्मण ने जो स्वस्ति कहा और स्वस्ति को म्लेच्छ भाषा में क्या कहते ? इन दोनों का ही जो जाननेवाला है, स्वस्ति को भी जाने और म्लेच्छ भाषा में स्वस्ति का अर्थ क्या होता है, वह भी जानें, दोनों का जाननेवाला है, है ? ब्राह्मण की और म्लेच्छ की भाषा का दोनों का अर्थ जाननेवाला `कोई दूसरा पुरुष या ब्राह्मण स्वयं' और ब्राह्मण भी स्वस्ति को भी जानते हैं, स्वस्ति का अर्थ भी जानते है, अथवा कोई अन्य स्वस्ति के अर्थ को भी जानते है, एवं स्वस्ति के भाव को भी जानते है, स्वस्ति शब्द को भी जानते है और स्वस्ति शब्द के भाव को भी जानते है। उस ब्राह्मण ने कहा और दूसरा भी हो, यह ब्राह्मण भी दोनों का अर्थ जाननेवाला कहे, अथवा दूसरा कोई आकर दोनों को जाननेवाला उसको कहे। आहाहा !

है ? दोनों का अर्थ, **`दोनों का अर्थ हो`** ! जाननेवाला कोई दूसरा पुरुष अथवा वही ब्राह्मण म्लेच्छ भाषा बोलकर' आहाहा ! देखो, अब यह स्वस्ति का अर्थ बतलाते हैं तब म्लेच्छ भाषा आयी, उसे समझाया जाता है कि, `स्वस्ति' शब्द का अर्थ यह है कि **`तेरा अविनाशी कल्याण हो'** स्व-अस्ति, स्व अर्थात तुम्हारी जो वस्तु है, अस्तिरूप - ऐसा तुम्हारी अस्ति में तुम्हारा भान हो जाओ। `स्वस्ति' समझ में आया ? तुम्हारा जो स्वरूप है उसका कल्याण हो... चाहे बाहर की बात कैसी भी हो परंतु स्व जो तुम्हारा है उसकी अस्ति हो। उसकी सिद्धि हो, जो है उससे तुझे यह स्वस्ति का अर्थ है। तुम्हारा कल्याण हो। तुम हो, आहाहा ! तो तुम्हारा कल्याण हो - ऐसा म्लेच्छ भाषा में स्वस्ति का कल्याण हो - ऐसा अर्थ किया। आहाहा ! है ?

`तब'** यहाँ तो ऐसे ही प्राणी लिया, भाषा समझानेवाले ने भी ऐसी भाषा कही, फिर धर्म समझनेवाले ने कहा कि क्या कहते हैं यह ? और उसने कहा कि तेरा कल्याण हो यह अर्थ है। `तब तत्काल'... तत्काल देर नहीं लगाता है, (- ऐसा नहीं कि) थोड़ा विचार करें फिर - ऐसा भी नहीं, आहाहा ! तुम्हारा कल्याण हो, स्वस्ति का अर्थ - ऐसा है प्रभु है ? आहाहा ! तब यह समझाता है तो **`तब तत्काल ही उत्पन्न होनेवाले, अत्यंत आनंदमय अश्रुओं से' आहाहा ! यहाँ तो अभी अंतर के आनंद की बात है नहीं, अभी तो इस तरह हर्ष के आंसू आते हैं, व्यक्ति को बहुत हर्ष, हर्ष, हर्ष के आंसू आ जाते है न ? इसप्रकार हर्ष के आंसू बहुत आते, ऐसे हर्ष के आंसू आये। स्वस्ति का अर्थ यह ? तुम्हारा कल्याण हो, आहाहा ! शब्द तो थोड़े और भावार्थ तो उसका बहुत बड़ा, ऐसे सुनकर आंखमें से अश्रुधारा, आनंदरूपी हर्ष, हर्ष... आहाहा !

अत्यंत आनंदमय हो, `**अत्यंत आनंदमय अश्रुओं से जिसके नेत्र भर जाते है**' आंखों में हर्ष के आंसू भर जाते है, ओहोहो ! स्वस्ति का - ऐसा अर्थ हम तो कुछ नहीं समझते थे और यह क्या कहते हैं यह समझने की मेरी जिज्ञासा थी, कि इसका क्या अर्थ ? कि तुम्हारा कल्याण हो तब अत्यंत आनंद के अश्रुओं से, आंख में हर्ष (रूप) आनंद आया। आहा ! हर्ष का आनंद आया, हर्ष के आंसू आये, हर्ष के आंसू आये और वह रोता है तथा शोक में (भी) आंसू आये... रोते हैं, यदि लड़का मर जाये... यहाँ तो हर्ष के आंसू आये। आहाहा !

अभी तो दृष्टांत है हाँ ! आनंद से जिसके नेत्र भर जाते है फिर देखा ? जिसके आंसू भर जाते हैं, अश्रुधारा... आहाहाहा ! `**- ऐसा वह म्लेच्छ इस `स्वस्ति' शब्द के अर्थ को समझ जाता है।**' यह स्वस्ति का अर्थ समझ जाता है, अच्छी तरह समझ जाता है। आहाहा ! बिलकुल अपरिचित व्यक्ति हो, बिलकुल भी स्वस्ति का अर्थ नहीं जाननेवाला, फिर भी वह स्वस्ति के शब्द पर और स्वस्ति कहनेवाले पर बहुमान से टकटकी से देखकर देखा और जब अर्थ किया (तो) खुश हो गया, हर्ष के आंसू आ गये। आहा !

`**शब्द के अर्थ को समझ जाता है**' यह दृष्टांत हुआ। यह तो अभी दृष्टांत हुआ, आत्मा में तो अब (घटायेंगे) आहाहा ! `**उसीप्रकार**' दृष्टांत की भांति व्यवहारी जन भी अर्थात अनादि (का) अज्ञानी प्राणी, व्यवहारी जन है, निश्चय क्या वस्तु है उसकी खबर नहीं आत्मा आनंद स्वरूप है शुद्ध अभेद अखण्ड है उसकी खबर नहीं, नहीं, खबरवाला व्यवहारीजन... आहाहाहा ! जन भी तो दृष्टांत दिये न ? तब यह व्यवहारीजन भी ऐसे, जैसे वह म्लेच्छ भी समझनेवाला नहीं था, व्यवहारीजन भी नहीं समझनेवाले है। समझ में आया ? आहाहा !

`**आत्मा शब्द के कहने पर...**' आत्मा... कहा जिस तरह उसने स्वस्ति कहा, (था) `आत्मा' शब्द के अर्थ का ज्ञान न होने से, आत्मा शब्द का अर्थ अर्थात उसका वाच्य वस्तु क्या है उसका ज्ञान न होने से... देखा ? आत्मा शब्द का ज्ञान बिलकुल नहीं, यहाँ - ऐसा प्राणी लिया है। आहाहा ! `**कुछ भी न समझकर**' कुछ समझता नहीं कि क्या कहते हैं यह ? तुम नहीं समझते अर्थात आत्मा कहनेवाले के प्रति अनादर नहीं, क्लेश नहीं, खेद नहीं, यह क्या कहते हैं ? इस प्रकार नहीं, आत्मा कहनेवाले के प्रति प्रेम से, उसके सामने देख रहे है, आहाहा ! कुछ भी न समझ कर `मेंढ़े की भांति' मेंढ़ा-भेड़ उसकी तरह भेद जैसे एक-दूसरे के पीछे चलते ऐसे भेड़ होती है - भेड़ एक को देखकर अनुकरण करती भेड़ नीचे देखकर कुआ में गिरे तब दूसरा भी गिरती है इसप्रकार यह अनुकरण करनेवाले है। आहाहा ! ऊपर

नहीं देखती यह नीचे देखते पहली भेड़ आगे चले उसका अनुकरण करती भेड़। आहाहा !

इसीप्रकार यहाँ भेड़ की भाँति अनुकरण करनेवाले... आहाहा ! `आँखें फाड़कर' आहाहा ! टकटकी लगाकर देखते रहते हैं, अंदर क्षयोपशम ज्ञान में यह क्या कहते हैं इसप्रकार लगातार टकटकी लगाकर देखते रहते है, आत्मा को जानने के लिये ज्ञान की पर्याय विकसित हो गई, अंदर ज्ञान... उसकी आँखें (कहीं) थी यहाँ ज्ञान विकसित हुआ, विकसित हुआ और टकटकी लगाकर यह क्या कहते हैं ? `आत्मा' कहते हैं, क्या है ? आहाहा ! उसीप्रकार आत्मा का अर्थ न समझनें पर नहीं समझना, छोड़ दे, चलो - ऐसा भी नहीं, क्या कहते हैं इसे समझने की जिज्ञासा में ज्ञान का जो क्षयोपशम था उससे टकटकी लगाकर देखते रहें (कि) क्या अर्थ है, क्या अर्थ है क्या कहते हैं समझ में आया ? आहाहा ! टकटकी लगाकर ज्ञान की पर्याय में रहते हैं (कि) आत्मा का क्या अर्थ है (यह) समझने की जिज्ञासा टकटकी लगाकर खड़ा है। आहाहा ! बापू ! आचार्य महाराज तो...

**`किन्तु जब व्यवहार-परमार्थ मार्ग पर सम्यग्ज्ञानरूपी महारथ को चलानेवाले'** यहाँ केवली नहीं लिये है। स्वयं मुनि थे और मुनि अपनी बात करते हैं। मुनि के समय सर्वज्ञ नहीं थे, और मुनि स्वयं `आत्मा' कहनेवाले थे। तब यह मुनि, आहाहा ! व्यवहार और परमार्थ मार्ग दोनों को जाननेवाले थे। भेद से समझाना यह उसका भी ज्ञान था और अभेद वस्तु, क्या है उसका भी ज्ञान था। तब व्यवहार और परमार्थ मार्ग पर `सम्यग्ज्ञानरूपी'... दोनों का सम्यग्ज्ञान, व्यवहार से - ऐसा कहा जाता है और निश्चय यह है। दोनों का जिसको ज्ञान है... आहाहा ! सम्यग्ज्ञानरूपी महारथ को चलानेवाले, यहाँ मुनि नहीं लिये, आचार्य को ग्रहण किया है। केवली नहीं क्योंकि केवली उस समय थे नहीं, यहाँ तो आचार्य स्वयं जिस स्थिति में है उस स्थिति में बात करते हैं। आहाहा !

सम्यग्ज्ञानरूपी महारथ... देखो ! रथ के दो पहिये होते है न, यह व्यवहार और निश्चय दो पहिये। व्यवहार से कैसे समझाना और किस चीज को समझना, दोनों का ज्ञान यथार्थ है। आहाहा ! समझ में आया ? दोनों का ज्ञान हो ! और यह व्यवहार में आया है, आत्मा कहा तो समझे नहीं, तो समझाने का विकल्प तो आया है तब व्यवहार में आया तो है, चाहे आदर नहीं, परंतु आया है विकल्प से समझने को, आहाहा ! समझ में आया ?

सारथी की भांति, **`सम्यग्ज्ञानरूपी महारथ को चलानेवाले सारथी की भाँति'** आहाहाहा ! रथ में बैठनेवालों की भाँति नहीं। सारथी की तरह कहा न ! सारथी

जैसे चलाता है दो पहियेवाले रथ को, इसीप्रकार जो मुनि व्यवहार से कैसे कहा जाता है, और निश्चय क्या है दोनों का (ज्ञान है) आहाहा ! ऐसी टीका, भरत खण्ड में अभी यह टीका आत्मख्याति... आहाहा ! आत्मा को अंदर से प्रफुल्लित कर देती है, हिला दिया है, प्रभु तुम कैसे हो नाथ, यहाँ कहाँ रुके हो तुम, आहाहा ! तुमको हमने व्यवहार आत्मा कहकर पुकारा तब तुम समझे नहीं, तब हमको भी समझाने का विकल्प आया है, तब निश्चय और व्यवहार दोनों ही रथ में हम है अभी तो, दोनों भाव, आहाहा ! समझ में आया ? है न सामने पुस्तक ? हम निश्चय में भी है और समझाने का विकल्प आया तब उसमें ज्ञान हमारा है, दोनों का ज्ञान है, हम दोनों का ज्ञान करते हैं। आहाहाहा !

यहाँ तो केवली आत्मा को समझाते है, ऐसी बात यहाँ ली नहीं, क्योंकि अपनी बात करते है, छठवीं गाथा में भी अपनी बात करते है, यह प्रमत्त-अप्रमत्त अवस्था हम में है, (परंतु) यह मैं नहीं में तो ज्ञायक हूँ, (जो) है उस भूमिका से बात करते हैं, आहाहाहा ! समझ में आया ?

मुनिराज कुन्दकुन्दाचार्य हों अथवा अमृतचन्द्राचार्य हों, कोई भी संत, दिगम्बर संत सच्चे हों, तब इन दिगम्बर संतो ने आत्मा कहा और वह समझने में आया और समझने के कारण वास्तव में टकटकी लगाकर भाव है, तब आत्मा कहा... वह भी व्यवहार परमार्थ को जाननेवाला कदाचित हो, उसका अर्थ करनेवाला हो, कदाचित दूसरा भी हो। हाँ ! आहाहा ! ***व्यवहार से विकल्प आया है न ? समझाने का भेद - (विकल्प) तो आया है। तब 'हम' भी विकल्प में आये है, (आया) हो परंतु आदरणीय नहीं। आहाहा ! और भाषा व्यवहार की होगी, उसके भी हम कर्त्ता नहीं है, आहाहा ! तथा व्यवहार से तुम्हें समझाते है तब तुम व्यवहार से समझोगे इसलिये व्यवहार आदरणीय है - ऐसा नहीं है।*** आहाहाहा !

एक-एक गाथा और एक-एक टीका, जगत का भाग्य... यह समयसार जैसी चीज रह गई !! आहाहा ! एवं यहाँ तो - ऐसा ही आत्मा लिया है, वहाँ भी कहा पांचमी गाथा में... प्रमाण करना, मैं कहता हूँ परंतु, गजब बात है तुम्हारी प्रभु, हम निमित्त आये और तुम्हारे उपादान में ऐसी तैयारी न हो - ऐसा नहीं। आहाहा ! तुमको निमित्त मिले आत्मा को समझानेवाले आचार्य और संत ! आहाहाहा ! और तुम अनुभव करके प्रमाण करो, अनुभव करके हाँ कहना। आहा ! गजब बात है प्रभु ! ओहोहो ! यह भाषा यह व्यवहार, यह निश्चय, यह समझानेवाले व्यवहार से कहते हैं, समझनेवाला भी व्यवहार से निश्चय समझाते है। आहाहा ! ऐसी यहाँ वस्तु ली है। व्यवहार कहा हमने और नहीं समझते हैं - ऐसी बात यहाँ है ही नहीं।

आहाहाहाहा ! समझ में आया ?

सभी जगह है न यह, उसमें आया है न ? शरीर और आत्मा को भिन्न बताया है, तब कौन नहीं समझते ? कौन - ऐसा आत्मा है कि नहीं समझे ? आहाहा ! यहाँ कहते हैं कि आत्मा शब्द कहनेवाला और सुननेवाला यह समझे नहीं तो `कहनेवाला निश्चय-व्यवहार का जाननेवाला है अथवा कोई दूसरा व्यवहार-निश्चय का जाननेवाला, आत्मा का अर्थ दूसरों को समझाते है। आहाहा ! समझ में आया ? कुन्दकुन्दाचार्य अमृतचन्द्राचार्य कहते हैं, अपनी उपस्थिति में हमने उससे कहा, आहाहा ! कदाचित हम कहते हैं व्यवहार निश्चय उस समय दोनों समय दोनों कहनेवाले हमें तो यह समझाया जाता है। परंतु हमने कहा यदि उसका अर्थ करने का समय हमारे पास न हो तब दूसरा उसको अर्थ करनेवाला मिलेगा ही, आहाहा ! और वह समझेगा ही। आहाहाहाहा ! ऐसी बात है।

व्यवहार परमार्थ मार्ग को, जो कहते हैं किं व्यवहार में आया कि नहीं, ? परमार्थ का भी ज्ञान है एवं व्यवहार (से) विकल्प आया है। छद्मस्थ की बात है न ? यहाँ केवली की बात है नहीं, कारण कि यहाँ केवली कहते हैं और वह लोग समझते हैं - ऐसा समय तो यहाँ है नहीं। यहाँ तो अपने समय की बात करते हैं। आहाहा ! जिस समय संत मौजूद थे कुन्दाकुन्दाचार्य अमृतचन्द्राचार्य आदि मुनियों ने... उन मुनियों ने दूसरों को कहा आत्मा और वह आत्मा का अर्थ नहीं समझे, तब उस समय वही मुनि स्वयं विकल्प में आये एवं परमार्थ का ज्ञान है दोनों (का) ज्ञान, रथों में चलनेवाला आया। आहाहा ! तब यह कहनेवाला भी आया कहनेवाले को समय नहीं मिला और उस समय वह समझे नहीं, समझ में आया ? और बाद में कोई कहनेवाला निश्चय-व्यवहार को जाननेवाला (है)... समझमें आता है। आहाहा !

एक-एक शब्द और एक-एक अर्थ में कितनी गंभीरता, उसके क्षयोपशम ज्ञान में कैसी स्थिति... आहाहा ! ऐसी बात संतो (की) ! एक-एक शब्द भाव भरा है, ऐसी चीज कहीं अन्यत्र नहीं। जिसके अंदर मान (है) और मान के साथ सुननेवाला तुरंत ज्ञान करेगा ही, यहाँ तो यह कहते हैं। आहाहाहा ! देखो ! प्रवचनसार में - ऐसा कहा न फिर, हम बात करते हैं तो आज समझ लो आज ही समझो, बायदा छोड़ दो - बाद में समझेंगे, फिर समझेंगे - ऐसा छोड़ दो। नेमचन्द्रभाई ! आहाहा ! दिगम्बर संतों के बाग बगची भी बातें तो देखो ! आहाहा ! उनके फूलों की सुगंध तो देखो ! आहाहा ! जब हम व्यवहार में आये समझाने के लिये, हम छद्मस्थ है न। छद्मस्थ है अतः व्यवहार विकल्प में आये हैं। आहाहाहा !

और परमार्थ की तो हमको खबर है, विकल्प से रहित हमारी चीज है और

उसकी भी वस्तु विकल्प से रहित है, इन दोनों का हमको ज्ञान है। आहाहा !

व्यवहार, परमार्थ मार्ग पर सम्यग्ज्ञानरूपी महारथ को चलानेवाले। महारथ को चलानेवाले... आहाहा ! जिसको अंतर अनुभव भी है और समझाने का विकल्प आया है ऐसे दोनों चक्र का रथ चलानेवाला, जिसको समझाने का विकल्प है नहीं, उनकी बात तो यहाँ है नहीं। आहाहा ! वह तो अंदर आनंद में मग्न है। आहाहाहा ! समझ में आया ?

परंतु जिसको व्यवहार का विकल्प आया वह आत्मा शब्द को नहीं समझे, कहने का विकल्प आया, यह समझता नहीं तब हमें उसका अर्थ करना होगा। आहाहा ! देवीलालजी। आहाहाहा ! अरे प्रभु, यह क्या है भाई ? आहाहा ! यह क्या चीज है यह ? आहाहा ! एक-एक गाथा, उसके एक-एक शब्द में, कितनी गंभीरता है। आहाहा ! कहते हैं कि आत्मा कहनेवाला वही सम्यग्ज्ञानरूपी महारथी निश्चय से व्यवहार में आया, यदि बोलने का समय न रहा तो निर्विकल्प में चले गये, आहाहा ! आत्मा कहा तो अवश्य परंतु बाद में अर्थ करने का समय नहीं रहा और अंतर में चले गये। आहाहाहा ! तब दूसरे आचार्य या मुनि जिनको जो विकल्प और निर्विकल्प दोनों का ज्ञान है और विकल्प में आये महारथ चलानेवाले... आहाहाहाहा !

सारथी की तरह है न ? महारथ को चलानेवाला सारथी, महारथ में बैठा है भगवान, यह भगवान को... आहाहा ! भगवान को क्या कहना है, यह सारथी रथ को चलाते हैं... आहाहा ! ***तीनलोक के नाथ सर्वज्ञ जिनेश्वर देव वह रथ में बैठे हैं और सारथी की जगह यह (आचार्य) है। वह माल तो परमात्मा तीनलोक के नाथ सर्वज्ञदेव का है, परंतु हम सारथी की तरह इस रथ को चलाते हैं।*** आहाहा ! निश्चय - ऐसा है और व्यवहार - ऐसा है। आहाहाहा ! गजब बात है।

महारथ को चलानेवाला कहा न ? निश्चय और व्यवहार मोक्षमार्ग को जिसे चलाना है जो अंतर में ठहर गये है ऐसे भी हैं और विकल्प आया - ऐसे रथ को परमार्थ को चलानेवाले। आहाहा ! सारथी के समान, यहाँ तो सारथी की भाँति, आहाहा ! सम्यक् वस्तु है, उनको यह भी ज्ञान है, और ज्ञान में यह आत्मा ही प्रतिष्ठित है। आहाहा ! तब यह निश्चय से व्यवहार की जो बात की थी उससे विकल्प भी आया एवं समझने की चीज भी समझे हैं, इन दोनों के अर्थ में चलानेवाला सारथी (कहा), जिनको व्यवहार की पड़ी ही नही एवं अंदर में स्थित है उनकी यहाँ बात नहीं, केवली की यहाँ बात नहीं। आहाहा ! समझ में आया ?

वह आत्मा समझे नहीं तो फिर दूसरा भी आया, उन्हें भी अपनी आत्मा का ज्ञान है और विकल्प आया है कि यह समझे नहीं अतः समझाना ! आहाहाहा !

मोक्षमार्ग प्रकाशक में आया है न ! प्रथम तो मुनि को अशुभ राग तो होता नहीं, परंतु धर्म का लोभी देखकर कोई धर्म का शुभराग आता है... आहाहा ! धर्म का लोभी, धर्म को समझनेवाला - ऐसे को देखकर शुभभाव आता है, तब शुभभाव में समझाते हैं। आहाहा ! है न भाई ? मोक्षमार्ग प्रकाश, आहाहा ! यह तो टोडरमल, बनारसीदास, राजमल्लजी, भागचन्द्रजी, ओहोहोहो ! संतों की बात तो क्या कहना... परंतु इनके पण्डित भी ! आहाहा ! जैन धर्म क्या वस्तु है यह टिका रखा है।

पण्डित जो ग्रहस्थाश्रम में रहते है, पर इस वस्तु में क्या फर्क है ? सम्यग्दर्शन में... सिद्ध के और तिर्यंच के सम्यग्दर्शन में फर्क है ? आहाहाहाहा ! यहाँ कहते हैं सारथी के समान अन्य कोई आचार्य अथवा तो आत्मा शब्द को कहनेवाले स्वयं व्यवहार में आते, देखो समझाने का विकल्प आया - ऐसा कहते हैं। आत्मा कहा और विकल्प छूट गया और निर्विकल्पता में आ गये, तब उनकी बात अलग है, तब दूसरे आत्मा मुनि संत कोई मिले उनको, यह व्यवहार मार्ग (में) रहते हुये आत्मा शब्द का अर्थ बतलाया, क्या ? आहाहाहाहा !

पुण्य-पाप के भाव को प्राप्त हो वह आत्मा - ऐसा नहीं कहा है ? पर का कुछ कर सके, जगत को तार दे वह आत्मा ! व्यवहार भी - ऐसा लिया है - ऐसा (नहीं) पर को तार दे - ऐसा। यह भी नहीं कहाँ यहाँ तो। आहाहा ! समझ में आया ?

यह आत्मा क्या है ? कि `दर्शन-ज्ञान-चारित्र को जो सदा प्राप्त हो, वह आत्मा' आहाहा ! देखो ! भेद करके इतना बताया। मुनिराज विकल्प में आये और वह आत्मा कहते हैं तो ***नहीं समझे तब व्यहार से - ऐसा कहा, प्रभु ! हम उसे आत्मा कहते हैं कि (जो) दर्शन-ज्ञान-चारित्र को प्राप्त हो ! पर के कार्य को करे और उसकी उपस्थिति में पर का कार्य व्यवस्थित हो, वह आत्मा - ऐसा नहीं कहा। उसीप्रकार दया-दान-व्रत-भक्ति के परिणाम को प्राप्त हो, कि जिस भाव से तीर्थंकर गोत्र बंधे उस भाव को प्राप्त हो वह आत्मा - ऐसा नहीं कहा।*** आहाहा !

गजब बात है भाई ! दिगम्बर संतों की इतनी गंभीरता ! आहाहा ! गजब बात है बापू दूसरों को दुःख लगे... बस यह एक ही सत्य है दूसरे कहीं नहीं ? बापू ! सत्य तो यह एक ही है। आहाहा ! सर्वज्ञ परमात्मा ! आहाहा ! इस रथ को चलानेवाले संत ! आहाहाहा ! उसका मार्ग निश्चय और व्यवहार, आहाहाहा ! यह दिगम्बर संत स्वयं पुकार करते हैं, अपनी स्थिति को ही बताते हैं, हम निश्चय और व्यवहार दोनों में है। अभी तो समझाने को आये तब निश्चय और व्यवहार। हम केवली नहीं है, हम निर्विकल्प में स्थित नहीं है एवं व्यवहार को समझाते है। आहाहा !

दर्शन-ज्ञान-चारित्र को जो सदा प्राप्त हो, भाषा देखो ! आहाहाहा ! प्रभु इसको हम आत्मा कहते हैं, व्यवहार में हम आये हैं निश्चय में तो है ही, तब विकल्प द्वारा भी तुमको - ऐसा कहते हैं और तुम सुननेवाले भी विकल्प से - ऐसा सुनते हो, और क्या सुना ? कि जो अंदर आत्मा है, यह दर्शन, ज्ञान, चारित्र को सदा प्राप्त हो, आहाहा ! राग को प्राप्त हो कि व्यवहार रत्नत्रय को प्राप्त हो, या उपदेश देनेवाला विकल्पवाला आत्मा हो, यहाँ - ऐसा नहीं कहा, कहनेवाला विकल्प में आया है, परंतु बताया वह आत्मा, कि जिसे यह आत्मा, दुनियाँ को समझाते हैं, विकल्प द्वारा (ज्ञात हो) यह आत्मा - ऐसा नहीं कहा। समझ में आया ? आहाहाहाहा !

यह दर्शन-ज्ञान-चारित्र को जो सदा प्राप्त हो, गजब बात है नाथ ! तुम्हारे परमार्थ अर्थ को बताना, व्यवहार से बताना, आहाहा ! भेद करके भी बताना यह व्यवहार। यह भी भेद करके बताना, परंतु बताया क्या ? प्रभु तुम्हारे आत्मा को... आत्मा तो कहा, तब - ऐसा अर्थ है कि जो दर्शन-ज्ञान और शांति इन भेदरूप परिणमे, प्राप्त हो, वह आत्मा, आहाहाहा ! किसी की दया पालनेवाला वह आत्मा। व्यवहार से भी यह नहीं कहा, व्यवहार से यह लिया है (कि दर्शन, ज्ञान, चारित्र को) आहाहा ! गजब बात है।

समयसार कोई - ऐसा बन गया, कुन्दकुन्दाचार्य ने (बताया) आहाहा ! धन्य काल... समझ में आया ? कि हम जो आत्मा इसको कहते हैं प्रभु हम व्यवहार में विकल्प में आये है और तुमको समझाते है न ! परद्रव्यको व्यवहार तो आता है, और तुमको व्यवहार से समझाते हैं - यह भी आया परंतु व्यवहार क्या ? कि यह आत्मा चले गति करे वह (त्रस) आत्मा, स्थिर रहे वह स्थावर, गति करे वह त्रस, दया पालने का भाववाला आत्मा ! आहाहा ! हमारी भक्ति, तीर्थंकर की भक्ति करे यह आत्मा... आहाहाहा ! यह आत्मा, व्यवहार को बराबर टिकाए रखे वह आत्मा - ऐसा नहीं कहा। आहाहा ! नरेशजी भाग्य !

दर्शन-ज्ञान-चारित्र को... प्राप्त हो इतना लिया, सदा प्राप्त हो, आहाहा ! भेद करके कहा परंतु इतना भेद लिया प्रभु यह तुम्हारी चीज जो है न ? हम तो इसको आत्मा कहते हैं कि जो दर्शन-ज्ञान-चारित्र को सदा प्राप्त हो, वह भी व्यवहार आया, भेद से बताया न ? आहाहा ! इसमें कोई व्यवहार रत्नत्रय का राग आये यह तो बात कहीं नहीं प्रभु ! आहाहा ! इतना भेद किये बिना समझ सकते नहीं। यह आता है उस कलश टीका में आता है, बहुत बुद्धिवाला हो तो भी, कलश टीका में आता है न ? इतना तो कहना ही पड़े, ज्ञान वह आत्मा, ज्ञान वह आत्मा, इतना तो कहना ही पड़े। आहाहा ! वह आत्मा इतना तो सद्भूत व्यवहार हुआ। आहाहा ! यह भी

ज्ञान सो आत्मा यह भी सद्भूत व्यवहार हुआ। आहाहा ! यहाँ मोक्षमार्ग एक साथ बताया है, प्रभु आत्मा इसको कहते हैं... आहाहा ! कि दर्शन-ज्ञान-चारित्र को निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को हाँ ! व्यवहार की बात यहाँ नहीं, व्यवहार से कहते परंतु वह भेद आया न अब, व्यवहार। परंतु भेद आया क्या ? कि दर्शन-ज्ञान-चारित्र जो निर्विकारी दशा, वीतरागी पर्याय को प्राप्त हो वह आत्मा उसे तू जान ले कि आत्मा है, आहाहा ! समझ में आया ? जो सदा प्राप्त हो, आहाहाहा ! किसी समय व्यवहार को प्राप्त और कभी दर्शन-ज्ञान-चारित्र को प्राप्त हो - ऐसा नहीं कहा। आहाहा ! गजब बात करते हैं एक-एक गाथा में तो बारह अंग का (सार भर दिया) विशेष कहेंगे। (प्रमाण वचन गुरुदेव !)